भारतीय चित्रकला (भाग-1)

1

प्रागैतिहासिक चित्रकला

- भारत में प्रागैतिहासिक चित्रकला को प्रकाश में लाने का श्रेय कार्लाइल, काकार्बन और पंचानन मिश्र तथा संस्थाओं में एशियाटिक सोसाइटी को जाता है, जिन्होंने मिर्ज़ापुर (कैमूर) की पहाड़ियों के गुफाचित्रों को उद्घाटित किया।
- इन चित्रों में अधिकतर आखेट के चित्र प्राप्त होते हैं।
- इनमें पशु-पक्षियों का अंकन मुद्राओं के साथ करने का प्रयास किया गया है।
- आखेटकों के पास नोंकदार भाले, ढाल और धनुष-बाण आदि दिखाये गए हैं।
- कुछ चित्रों में आदि धर्म और जादू-टोने एवं कृषक जीवन का चित्रण भी किया गया है।
- रंगों में व्यापकता नहीं मिलती, हालाँकि कुछ चित्रों को गेरू, खड़िया और काले आदि रंगों से रंगा गया है।
- प्रागैतिहासिक चित्रकला के अन्य नमूने मिर्ज़ापुर (उ.प्र.), रायगढ़ (महाराष्ट्र), पंचमढ़ी एवं होशंगाबाद (म.प्र.), शाहाबाद (बिहार) आदि से मिले हैं।
- भारत की प्रागैतिहासिक गुफा चित्रकारी, स्पेन की शैलाश्रय चित्रकलाओं से असाधारण रूप से मेल खाती है।
- ये चित्रकलाएँ आदिम अभिलेख हैं जिन्हें अपरिष्कृत लेकिन यथार्थवादी ढंग से तैयार किया गया है।

भीमबेटका

- इसकी खोज 1957-58 में डॉ. विष्णु श्रीधर वाकणकर द्वारा की गई थी।
- यह रायसेन ज़िले (M.P.) का एक पुरापाषाणिक गुफा आवास है जिसकी निरंतरता मध्य ऐतिहासिक काल तक रही।
- यह विन्ध्याचल की पहाड़ियों के निचले छोर पर है तथा इसके दक्षिण में सतपुड़ा की पहाड़ियाँ आरंभ हो जाती हैं।
- भीमबेटका में 700 से अधिक शैलाश्रय हैं जिनमें 400 शैलाश्रय चित्रों द्वारा सज्जित हैं।

2

हड़प्पाकालीन चित्रकला

- यह एक नगरीय सभ्यता थी जिसमें मिट्टी के खिलौनों, मुहरों, बर्तनों आदि पर चित्रकला की छाप है।
- यहाँ अधिकांश पात्रों पर लाल रंग चढ़ाकर काले रंग से चित्रकारी की गई है। यह B-R-W- (Black and Red Ware) संस्कृति का द्योतक है।
- यहाँ चित्रों में ज्यामितीय आरेखनों के अलावा मानव, पशु-पक्षियों, वनस्पतियों आदि का चित्रांकन भी मिलता है।
- कुछ आरेखनों में जगह भरने हेतु बिन्दुओं और सितारों का प्रयोग किया गया है।

3

संक्रमण काल

- सिंधु घाटी सभ्यता के पतन के बाद चित्रकला की धारा क्षीण होती प्रतीत होती है।
- वैदिककाल और महाजनपदकाल में भी चित्रकला का विस्तृत ब्यौरा नहीं मिलता है।
- बौद्ध एवं जैन सहित अन्य धार्मिक विचारधाराओं के विस्तार ने चित्रकला के विकास में महती भूमिका निभाई।
- 500 ई.पू. से 200 ई.पू. के बीच जोगीमारा (छत्तीसगढ़) और सीताबेंग की गुफाओं में प्राय: लाल, काले एवं सफ़ेद रंगों से चित्रकारी के साक्ष्य मिले हैं।
- सरगुजा (छत्तीसगढ़) की रामगढ़ पहाड़ियों में जोगीमारा और सीताबेंग नामक गुफाएँ स्थित हैं।
- 'जोगीमारा' भारतीय चित्रकला की निरंतरता का प्रतीक है।
- उसके बाद 200 ई. से लेकर 700 ई. सन् के काल में अजंता, बाघ और बादामी में भारतीय चित्रकला ने ऊँचाइयाँ छुई हैं।

4

अजंता चित्रकला

- महाराष्ट्र के औरंगाबाद ज़िले में सह्याद्रि की पहाड़ियों में स्थित अजंता में कुल 30 गुफाएँ हैं।
- घोड़े की नाल के आकार (अर्द्धवृत्ताकार) की ये गुफाएँ वगुर्ना नदी घाटी के बाएँ छोर पर एक आग्नेय चट्टान को काटकर बनाई गई हैं, जिसके निष्पादन में 8 शताब्दियों का समय (2nd Cent- B-C to 7th Cent- A-D) लगा।
- गुफाओं की दीवारों (भित्ति) तथा छतों पर बनाए गए चित्रों में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण चित्र जातक कथाओं (बुद्ध) से जुड़ा हुआ है।
- अजंता की गुफा संख्या 9 और 10 में प्राचीनतम चित्रकलाएँ हैं जिनकी समानता अमरावती की मूर्तिकला और सातवाहन काल (2nd B-C) की मानव आकृतियों की वेशभूषा, आभूषणों तथा जातीय विशेषताओं से है।
- गुफा संख्या 16-17 के चित्र पाँचवी सदी के दौरान बने हैं, इनमें आंध्र और वाकाटक शासकों की चर्चा भी है।
- 16वीं गुफा में सर्वश्रेष्ठ चित्र मरणासन्न राजकुमारी तथा महात्मा बुद्ध के उपदेश का है।
- गुफा संख्या 1, 2 और 5 के चित्र पाँचवी सदी से छठी सदी में यानी सबसे बाद में बने।
- इन गुफाओं (1, 2, 5) में अत्यधिक अलंकरण और आभूषणीय अभिकल्पों के साथ जातक की कहानियों को चित्रित किया गया है।
- गुफा संख्या एक में पद्मपाणि अवलोकितेश्वर, मार-विजय तथा चालुक्य राजा पुलकेशिन द्वितीय और ईरान के ससानी साम्राज्य के बादशाह खुसरो द्वितीय के साथ दूतों के आदान-प्रदान का चित्र भी है।
- अजंता की चित्रकला में रेखाओं के ज़रिये गहरे-चमकदार गुलाबी, भूरे, सिन्दूरी, हरे आदि रंगों से ऐसा चित्र बनाया गया है, जिसकी चमक हज़ारों साल बाद भी शेष है।
- अजंता के चित्रों की एक खास विशेषता इसके पात्रों का स्वभाव चित्रण है।

5

एलोरा चित्रकला

- इसे मराठी में वेरूललेणी या वेरूल की गुफाएँ कहते हैं जो अजंता की गुफाओं से मात्र 9 किलोमीटर दूर हैं।
- माना जाता है कि इन गुफाओं में 300 ई. सन् से एक हज़ार ईस्वी तक चित्रांकन का काम हुआ है।
- यह भारत के तीनों प्राचीन धर्मों (हिन्दू, जैन एवं बौद्ध) से जुड़ी हुई है।
- यहाँ की गुफाओं में कैलाश, लंकेश्वर, इंद्र-सभा और गणेश के चित्र दीवारों पर मिलते हैं।
- एलोरा की चित्रकलाएँ अजंता के शास्त्रीय मानदंड से भिन्न हैं, यानी इनमें कला-कौशल के ह्रास के संकेत स्पष्ट दिखते हैं।
- एलोरा की चित्रकलाओं की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण लाक्षणिक विशेषताएँ हैं- सिर को असाधारण रूप से मोड़ना, भुजाओं के कोणीय मोड़, गुप्त अंगों का अवतल मोड़, तीखी प्रक्षिप्त नाक और बड़े-बड़े नेत्र।
- एलोरा की चित्रकला मध्यकालीन विशेषताओं का संकेत भी देती है।
- एलोरा की गुफा-मंदिर सं. 32 में उड़ती हुई आकृतियों व बादलों का दृश्य अत्यंत सुन्दर है।